

Paper - 7th  
Public Administration

HERBERT SIMON AND DECISION

MAKING PROCESS

Q:- हर्बर्ट-सिमन के विकेंद्रित निर्णय-निर्माण प्रणाली का वर्णन कीजिए।

Ans: Introduction: हर्बर्ट साइमन जी (जो Administrative, निर्णय प्रक्रिया के अन्वय में प्रसिद्धि के उल्लेखनीय ग्रंथ रचने वाले हैं) अपने निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में मुख्य विशेषताओं के वर्णन में मानव-व्यवहार का विश्लेषण किया, जहाँ वह केन्द्रीय धारणा है। जो संगठन और उनके कार्यों को सही ढंग से निर्माण में सहायक है।

प्रकार में निर्णय प्रक्रिया के परिणाम होते हैं। निर्णय करने की प्रक्रिया की तीन विशेषताएँ होती हैं। पहली कोई भी निर्णय स्वतंत्र होता है। निर्णय स्वतंत्रता: किसी प्रयोजन या लक्ष्य को पूरा करने के लिए लिए जाते हैं।

दूसरा निर्णयों की एक क्रमिक श्रृंखला होती है। कोई भी निर्णय अकेला नहीं होता। वह अपने पहले और बाद के निर्णयों के किसी न किसी रूप में जुड़ा होता है।

तीसरी कोई भी निर्णय किसी वास्तविक अवधि में होता है, जिसमें सहजगामी धारणाएँ परिणाम को प्रभावित करती (हती हैं), अतः निर्णय करना एक प्रक्रिया है और वह समय पर होता है। इसलिए आरो और पक्षिका और वास्तविक धारणाएँ परिणाम को प्रभावित करेंगी।

Meaning:

निर्णय का शाब्दिक अर्थ होता है अंतिम परिणाम तक पहुँचने के लक्ष्य प्राप्त करना है, जबकि व्यावहारिक दृष्टिकोण से इसका आशय निष्कर्ष पर पहुँचने (Come to a Conclusion) के हैं। प्रशासन में निर्णय प्रक्रिया में Herbert A. Simon के निर्णय प्रक्रिया के तीन धारा बतलाते हैं।



प्रथम स्तर को अन्वेषण क्रिया मानते हैं। जो अष्ट  
 बलवती है तब और तब ही निर्णय लेना पड़ती है।  
दूसरे स्तर को उन्होंने डिजाइन क्रिया के नाम  
 से सम्बोधित किया है। जिसमें वैकल्पिक विधियों की  
 चोख और उनका विकास किया जाता है।  
 तीसरे स्तर को परम क्रिया का नाम दिया है।

डिजाइन के अनुसार निर्णय-निर्माण  
 तार्किक (विवेकशीलता) मनन पर आधारित) होनी  
 चाहिए। उन्होंने तार्किकता की परिभाषा देते हुए  
 कहा है कि अष्ट मूल्यों की किली प्रणाली के  
 संदर्भ में नरीमता प्राप्त अवस्था विकल्पों का  
 रेषा सम्बंध है जिसके द्वारा अवस्था के परिणामों  
 का पूर्वानुमान किया जा सके। जो कि निर्णय तभी  
 औचित्यपूर्ण या तार्किक माना जाता है। अब कि इसके  
 लक्ष्यों की पूर्ति के लिए उपयुक्त वाक्यों का मनन  
 किया जाता है।

डिजाइन का कहना है कि संगठन की  
 पूर्ण तार्किकता की अवधारणा को नकारते हैं। क्योंकि  
 अष्ट अतार्किक मान्यताओं पर आधारित है। पूर्ण  
 तार्किकता इस विज्ञापन पर आधारित है कि निर्णयकर्ता  
 सर्वज्ञानी है। तथा उसे सभी प्राप्त विकल्पों तथा  
 उनके परिणामों का ज्ञान है। डिजाइन का कहना है  
 कि ऐसी मान्यताएँ मौलिक रूप से गलत हैं। क्योंकि  
 आदित्य, मूल्यों तथा ऐश्वर्यों की अवधारणा तथा अपने  
 कार्य के संगत ज्ञान की सीमा के रूप में निर्णयकर्ता  
 की अनेक सीमा हैं। इसलिए डिजाइन का कहना है  
 कि ये संगठन को पूर्ण तार्किकता की अवधारणा  
 के साथ नहीं चलना चाहिए। तार्किक उसे सीमित  
 तार्किकता के आधार पर कार्य करनी चाहिए। डिजाइन  
 के अनुसार व्यक्ति केवल मर्यादित विवेकशीलता के  
 आधार पर कार्य करता है। डिजाइन प्रशासनिक व्यवस्था  
 में पूर्ण विवेकशीलता के बिना ही नकारता है।

इसके अनुसार व्यक्ति मानवीय व्यवस्था न ले पूर्ण विवेकशीलता (तार्किक) होता है और न ही पूर्ण गैर - विवेकशीलता (अतार्किक) अवधारणा विकसित करते हैं, वरन् अर्ध-मूर्खित विवेकशील करते हैं।  
 - यैकिक पूर्ण तर्क संगतता असम्भव है। इसलिए कार्यकारी एक अर्ध-मूर्ख ले वस्तुष्ट होता है।

लाइमन लिखते हैं कि प्रबन्धन षट्क अनुसूलतम धमाचानों की खोज कर सकते हैं, किन्तु पर्याप्त रूप से ठिक धमाचानों से ही वस्तुष्ट हो जाते हैं। विभिन्न प्रकार की धमाचानों से कारण प्रबन्धकों का व्यवस्था श्रेष्ठतम न होकर केवल 9-सोप प्रद ही हो जाते हैं। लाइमन का कहना है कि निर्णयन के तत्कालतम षड्क में प्रबन्धन का निर्देशन कार्य-क्षमता की कसौटी द्वारा होनी चाहिए। इस कसौटी का आधार अविश्राम है सीमित धमाचानों में श्रेष्ठतम परिणाम प्राप्त करना। लाइमन संश्लेषित तथा असंश्लेषित निर्णयों में अन्तर्दृष्ट करते हैं संश्लेषित निर्णय वे हैं जो खर्च ले घुटासै जाने वाले तथा आम होते हैं। ऐसे निर्णयों के लिए निश्चित प्रक्रिया बनाई जाती है। प्रत्येक निर्णय पर अलग विचार करना आवश्यक नहीं है। ऐसे निर्णय में गणितीय मापों तथा computer निर्णयकर्ता को तार्किक निर्णयों को लेने में मदद कर सकते हैं। इसके विपरीत असंश्लेषित निर्णय जैसे तथा अनबद्ध होते हैं।

लाइमन के अनुसार निर्णय शक्ति का विकसिणीकरण मुख्यतः निर्णयन केन्द्रों से तथा निर्णयन केन्द्रों की ओर पर्याप्त धन्यता मजि के विकास पर निर्भर करता है। अतः संगठन में औपचारिक एवं अनौपचारिक धन्यता धुंर होना चाहिए।

हर्बर्ट लाइमन ने अपनी प्रथा के निर्णयों को दो भागों में - कार्यात्मक निर्णय तथा अकार्यात्मक निर्णय में विभक्त किया है। लाइमन कार्यात्मक निर्णयों



में हैं। निर्यात अथवा प्रति दिन के सम्बन्धित निर्णय शामिल करता है। जिसके लिए एक प्रक्रिया निर्दिष्ट करती है। अतः कार्यात्मक निर्णय दुष्टाने वाली प्रवृत्ति के निर्णयों का समन्वय अपने में करते हैं। अतः इस प्रकार के निर्णयों के लिए प्रायः आधुनिकतम विधियों का प्रयोग बलवत् उचित होता है।

इसके विपरीत आकारात्मक निर्णय के निर्णय होते हैं जो प्रतिदिन के कार्यों के सम्बन्धित नहीं होते हैं। ये निर्णय किसी विशेष परिस्थिति के अन्तर्गत होने पर लिखे जाते हैं। इस प्रकार के निर्णयों की जा तो प्रकृति को ही तम किया जा सकता है। और न कोई विधि तम की जा सकती है। किसी नवीन जाला को स्थापित करने या न करने सम्बन्धी निर्णय इसी श्रेणी में आते हैं।

कार्यक्रम के अनुसार निर्णय तीन तरीकों से कराये जा सकते हैं। एक तरीका शक्ति के प्रयोग का है। दूसरा भावनात्मक संतुष्टि और सम्मोहन का तीसरा तरीका सहयोगियों और तथ्यों के अवगत कराया जाना है।

कार्यक्रम के मॉडल में बड़ा ही उपयोगी और अपारिवादी दृष्टिकोण है। जिसके निर्णयप्रण प्रक्रिया, नैतिकता परक प्रवृत्तियों पर ध्यान देने का विशेष महत्त्व दिया गया। कार्यक्रम का मॉडल हमें संगठनात्मक जीवन की उच्च वास्तविकताओं को अधिक निकट से समझने के लिए बाध्य करता है कि प्रबन्धनीय निर्णय प्रवृत्तियों के और क्यों लिखे जाते हैं।

कार्यक्रम ने एक नवीन संगठनात्मक संरचना के निर्माण पर जोर दिया जो मानव

नैतिक निर्णय और मूल

मनोविज्ञान पर आधारित है। जो निर्णय कर्ता और  
विवेकशीलता की क्षमताओं को बचीकाए करती है। जो  
मानव चयन प्रक्रिया को समझती है। तथा जिसमें  
संगठन सदस्यों की आवश्यकताओं व व्यक्तियों का  
सन्तुलन विद्यमान है।

अतः साइमन के निर्णय की  
प्रक्रिया के विश्लेषण पर अनेक विशिष्ट योगदान  
के लिए 1978 में मैकलेन बुल्डार से सम्मानित  
किया गया है।